ॐ

राम संदेश

भक्ति, ज्ञान एवं कर्मयोग की आध्यात्मिक पत्रिका

एक राम दशरथ घर डोले, एक राम घट-घट में डोले।
एक राम तिर्गुन से न्यारा, एक राम का सकल पसारा।।

वर्ष 58 | जनवरी–फ़रवरी 2012 | अंक 1

रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद

विषय -सूची

(जनवरी-फरवरी 2012)

क्रमांक		पृष्टांक
1. गज़ल	प्रार्थना	01
2. गुरुदेव के जीवन के दृष्टांत	दादागुरु की देन	02
3. ईश्वर की दूरी और नज़दीकी	प्रवचन गुरुदेव	07
4. आत्म साक्षात्कार संभव है	अध्यक्षीय सदुपदेश	11
5. सत्संग में हमारे कर्त्तव्य	सत्संगीय कर्म	16
6. ये कैसी मुहब्बत है	प्रेम के दो शिक्षाप्रद प्रसंग	18

राम ॐ संदेश

भक्ति ज्ञान एवं कर्मयोग की आध्यात्मिक पत्रिका

संस्थापक

ब्रह्मलीन परमसंत डा. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

संरक्षक

डा. करतार सिंह, अध्यक्ष आचार्य

रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग़ाज़ियाबाद

वर्ष 58 ✡ द्विमासिक पत्रिका ✡ जनवरी–फरवरी 2012 ✡ अंक 01

गज़ल

हे गोविन्द! हे गोपाल! हे गोविन्द राखो शरण
अब तो जीवन हारे! हे गोविन्द हे गोपाल ।
नीर पीवन हेतु गयो सिन्धु के किनारे,
सिन्धु बीच बसत ग्राह चरन धरि पछारे ।
चार प्रहर जुद्ध भयो, लै गयो मँझधारे,
नाक, कान डूबन लागे, कृष्ण को पुकारे ।
द्वारिका में शब्द गयो, शोर भयो भारे,
शंख चक्र गदा पद्म, गरूड़ लै सिधारे ।
सूर कहै स्याम सुनो, शरण हैं तिहारे,
अब की बेर पार करो, नन्द के दुलारे ।

दादागुरु की देन

दादा गुरुदेव की जीवन लीला के कुछ दृष्टांत

(1) स्कूल लीविंग क्लास के इम्तहान में मेरा जयौमेट्री का पर्चा बहुत खराब हो गया था। मुझको परेशान देखकर आपने (मेरे गुरुदेव परम पूज्य महात्मा रामचन्द्रजी महाराज) ने परेशानी का कारण पूछा। कहने लगे – बरखुरदार! परेशान मत हो। तुमको आम खाने की ग़रज है या पेड़ गिनने से? तुम पास हो जाओगे और फिर ऐसा ही हुआ भी, मैं आशा के विपरीत इम्तहान में पास हुआ।

(2) साइंस का प्रेक्टिकल का इम्तहान था। मैंने यह विषय नवें दर्जे में फ़ारसी छोड़कर ले लिया था, इसलिये इस विषय में कमज़ोर था और डर रहा था। आपने कहा – परेशान न हो। जिस वक्त तुम इम्तहान दो यह ख़्याल पुख़्ता बांध लेना कि तुम मौजद नहीं हो, बल्कि तुम्हारी जगह मैं इम्तहान दे रहा हूँ। चुनांचे मैंने ऐसा ही किया। सात सवालों तक यह ख़्याल बराबर क़ायम रहा बाकी दो सवालों पर घबराहट में यह ख़्याल जाता रहा। अतः सात सवाल बिल्कुल ठीक थे यद्यपि उनमें से दो सवाल कोर्स में से न थे और बाकी दो सवाल ग़लत हो गये थे तो भी मैं उस इम्तहान में अपनी क्लास में फ़र्स्ट था।

(3) एक समय की बात है कि गर्मी का मौसम था। सेवक शाम को एक दोस्त के साथ गंगाजी के किनारे टहलने गया था। देर हो गई, रात अंधेरी थी चारों तरफ़ अंधेरा था। कुछ भी दिखाई नहीं देता था, रास्ते का पता नहीं चलता था। एक पगडण्डी दिखाई दी। आगे मैं था और पीछे मेरा दोस्त। पगडण्डी जहाँ खत्म होती थी वहाँ जाकर मैं एक तरफ़ कूद गया। आगे जाकर क्या देखता हूँ कि पगडण्डी के आखिर में एक बड़ा सा कुआँ था और वह पगडण्डी नहीं थी बल्कि नाली थी।

परमात्मा को धन्यवाद दिया कि अगर एक तरफ़ को नहीं कूदते सामने को कूदते तो कुऐं में ही जाते। वापसी में आपके पास गया तो आपने पूछा – कहाँ थे? मैंने कहा टहलने गया था। आपने फ़रमाया कि

तुम बहुत लापरवाह हो। मुझे तुम्हारे साथ हर वक्त रहना पड़ता है। अगर तुम कुऐं में गिर जाते तो उस वक्त तुम्हें कौन निकालता ? ऐसी बेपरवाही अच्छी नहीं है सावधानी से रहना चाहिये।

(4) एक बार की बात है सेवक ओवरसियर के इम्तहान की तैयारी कर रहा था। तबियत कॉफ़ी पीने को चाही। चूँकि कॉफ़ी का प्रयोग घर में नहीं होता था, बाज़ार से मंगवाकर तैयार करवाई। जब तैयार होकर आई, यह ख्याल हुआ कि आपकी सेवा में भेंट करूँ। जब मैं कॉफी लेकर सेवा में उपस्थित हुआ तो आपने कहा – अच्छा! तुम कॉफी ले आये! मेरी तबियत कॉफी पीने की थी, सो तुमको हुक्म देकर तैयार करवाई है। इसी तरह एक बार की बात है कि आपने स्वप्न में दर्शन दिये और कहा कि – जितना रुपया तुम्हारे पास है वह अमुक जगह भेज दो। और मैंने उनका पालन कर दिया। सुनकर आपने उत्तर दिया – तुमने ठीक किया, यह हमारा ही हुक्म था।

(5) मुझको उपन्यास पढ़ने का शौक था और दिन में काम छोड़कर मुतवातिर पढ़ता ही रहता था। एक बार महात्मा जी के साथ सफ़र में था। दोपहर को जब आप सो गये तो मुझको मौका मिल गया और मैं नॉवल निकालकर पढ़ने लगा। कुछ ही देर बार देखा तो आप ग़ौर से मुझको देख रहे हैं। आपने पूछा – क्या पढ़ रहे हो ? मैंने निवेदन किया कि ख़ुफ़िया पुलिस का उपन्यास है। आप खामोश हो गये, मैंने किताब बन्द कर दी और आँखें बन्द कर लीं। क्या देखता हूँ कि आपके साथ सफ़र में हूँ और नॉवेल पढ़ रहा हूँ । आपने देखा और नॉवेल मेरे हाथ से लेकर फ़ाड़ डाला और रेलगाड़ी के बाहर फ़ेक दिया है। इस तरह उसी वक्त से मुझको उस बुरी आदत से छुटकारा मिल गया।

(6) सेवक पूज्य गुरुदेव परमसंत महात्मा रामचन्द्र जी महाराज के साथ मोटर में कानपुर से लखनऊ जा रहा था। अगली सीट पर मैं और डा. श्यामलाल जी बैठे थे और पिछली सीट पर आप और माताजी। मैं गाड़ी चला रहा था। जब लखनऊ पास आया तो मैंने गाड़ी हल्की की ताकि मेरी जगह डा. श्यामलाल जी ले लें, क्योंकि मुझे चलाने का अभ्यास कम था। आपने पूछा गाड़ी क्यों हल्की की ? डा. साहब ने उत्तर

दिया लखनऊ पास आ गया है, भाई साहब को चलाने का अभ्यास कम है। आपने कहा – क्या गाड़ी तुम चला रहे हो? आगे चलकर जब अमीनाबाद से गुजर रहे थे और गाड़ी दो बैलगाड़ियों के बीच से निकल रही थी तो अचानक एक मोटर गली में से तेजी से निकली। दुर्घटना होना निश्चित था। आप चिल्लाये – यह क्या?'' गाड़ी का इंजन अचानक फेल हो गया और न जाने कैसे दुर्धटना होत–होते बच गई।

(7) अपनी बिमारी के इलाज के लिये वे लखनऊ गये थे। वहाँ शाम के वक्त मकान में एक ऊँचे चबूतरे पर आप खाट पर लेटे हुए थे, जहाँ से बहुत दूर तक के आदमी दिखाई देते थे। मैं पास ही बैठा हुआ था। उधर बहुत दूर एक पेड़ के नीचे एक आदमी और एक स्त्री बातें कर रहे थे। आपने पूछा क्या तुम उस आदमी और स्त्री को देख सकते हो?'' मैंने निवेदन किया – देख सकता हूँ। आपने कहा – मैं उनकी तमाम बातें सुन रहा हूँ। क्या तुम बता सकते हो ऐसा क्यों है? मैंने निवेदन किया कि शायद आप इच्छा शक्ति से वहाँ मौजूद हैं। आप चुप हो गये जिससे मैंने अनुमान लगाया कि शायद मेरा जवाब ठीक न था।

(8) एक मर्तबा सेवक उनके साथ रेल में सफर कर रहा था। सामान ऊपर की बर्थ पर रखा हुआ था। अचानक मेरे मन में विचार आया कि सामान ठीक तरह नहीं रखा हुआ है। मैंने सामान ठीक करके रख दिया। थोड़ी देर बाद फिर वही विचार पैदा हुआ और सामन फिर दूसरी तरह से लगा दिया। आप चुपचाप देखते रहे। जब सामान रख चुका तो पूछा कि तुमने सब सामान दो दफ़ा क्यों पलटा? मैंने निवेदन किया कि मैं स्वयं नहीं जानता कि ऐसा मैंने क्यों किया? मुझको यह ख्याल पैदा हुआ था कि सामान ठीक से नहीं रखा हुआ है और मैंने दूसरी तरह से रख दिया। आपने कहा – यह तुमने नहीं किया बल्कि हमने करवाया है। हम सोचते जाते थे और तुम करते जाते थे। जब ख्यालात में ऐसी यग़नियत यानी एकभाव और समर्पणता नहीं आती यानी एक के ख़्याल को दूसरा क़बूल नहीं करता, पूरी तालीम नहीं उतरती।

(9) एक जिज्ञासु जो दिल्ली के थे आपसे मिलने को बहुत इच्छुक थे। मैं उनके साथ फतेहगढ़ में आपकी सेवा में उपस्थित हुआ। शाम के वक्त सत्संग हो रहा था और सब भाई बहन आँखें बंद किये आनंद का अनुभव

कर रहे थे। मैंने उनको सत्संग में बैठा दिया और स्वयं दूसरे रास्ते से आपके पास जा बैठा। थोड़ी देर बाद आपने सत्संग बंद कर दिया और मुझे कहा – श्रीकृष्ण मुझको सुबह से तुम्हारी याद आ रही थी। अच्छा किया जो आ गये। थोड़ी देर बाद पूछा कि फ़ैज की क्या हालत थी? मैंने निवेदन किया – फ़ैज खूब आ रहा था, तबियत खूब लग रही थी और सब आनंद में मस्त थे। आपने कहा – यह ठीक है लेकिन बताओ फिर हमने सत्संग क्यों बन्द कर दिया? मैंने अज्ञानता प्रकट की। आपने बताया – एक नया आदमी अभी सत्संग में आकर बैठा है। उसके विचार पवित्र नहीं हैं। ऐसी हालत में सब अभ्यासियों के मन पर उनके ख़्याल का असर पड़ रहा था जिससे अंदेशा था कि औरों का चित भी अपवित्र न हो जाये। सत्संग के बाद मैंने प्रार्थना की कि उन सज्जन को अपनी शरण में ले लें। आपने कहा – आरम्भ में जब आप मेरे पास आये थे उस वक्त मेरी जवानी थी और मेहनत कर सकता था और तुम्हारे साथ मेहनत की, लेकिन अब बुढ़ापा है वैसी मेहनत नहीं हो सकती। अब तुम्हारा काम है कि मेहनत करो और लोगों को बनाओ। जब तैयार करके लाओगे तो रंदा और रोगन मैं कर दूँगा। फिर उन सज्जन को बुलाया और कहा अभी तुम्हारा वक्त शुरु करने का नहीं आया है, मैं दिल्ली आऊँ उस वक्त मिलना।

(10) एक बार दो युवक विद्यार्थी जो विद्या सीखने के बड़े इच्छुक मालुम होते थे आपकी सेवा में आये और इच्छा प्रकट की। आपने बड़ी ख़ुशी से तालीम देनी शुरु कर दी। लड़के बड़े समझदार और प्रखर बुद्धि के थे। दो तीन दिन के बाद महात्माजी ने सेवक से कहा – तुम तवज्जोह दो और आप अलहदा हो गये। शाम को एकांत में मुझसे कहा कि ये दोनों लड़के गर्मदल के हैं। इनके नाम गिरफ्तारी का वारंट है, ये दोनों रूपेश हैं और छुपने के लिये स्वांग रचा है। अफ़सोस है कि कितने अच्छे लड़के हैं और इतने खतरनाक रास्ते पर चल पड़े हैं। काश, अगर कुछ दिन सत्संग में रहते तो इनके ख्याल और हालत बदल जाती लेकिन ये यहाँ ठहरेंगे नहीं और ऐसा ही हुआ। दो चार दिन बाद दोनों लड़के अपने आप ही चले गये।

(डा. महेश चन्द्र द्वारा प्रस्तुत जीवन चरित्र से)

प्रवचन गुरुदेव

ईश्वर की दूरी और नजदीकी

ओउम् के मायने शास्त्रों में उस शक्ति से हैं जो चारों जगत – पिंड, ब्रह्माण्ड पारब्राह्म और दयाल देश की स्वामी है। जिसमें उस आदि शक्ति के तीनों गुण, पैदा करने वाला, पालने वाला, प्यार करने और आनंद देने वाला है। यह शब्द सब सिफ़ात का मजमां (गुणों का भण्डार) है। जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरिया हर हालत में मौजूद है। इस शब्द के अन्दर भी सभी शक्तियाँ मौजूद हैं। इसके उच्चारण करने का मतलब यही है कि उस शक्ति का होना हम अपने घट में महसूस करें, हमको ज्ञान हो और आहिस्ता–आहिस्ता उससे मिलकर एक हो जाये। यह परमात्मा में मिल जाने का महामंत्र है।

ऋषियों का कहना है कि ईश्वर सबसे परे हैं। इतना दूर जितना हम ख्याल भी नहीं कर सकते। इतना महान जिसका हम अन्दाजा भी नहीं लगा सकते। इतना फैला हुआ जो ख्याल में भी नहीं आ सकता। उसके और हमारे बीच में इतना फ़ासला है जो ध्यान में भी नहीं आ सकता। उसकी इस महानता का, इस दूरी का, इस फैलाव का ख़्याल करने से जीव धबरा जाता है। तमाम जगत, ब्रह्मांड पारब्रह्म के परे वह है इसलिए दुनियाँ की सब चीज़ों को, सब ख्वाहिशों को सब वासनाओं को, सब इन्द्री भोगों को छोड़कर उसका पाना अत्यंत कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव सा है।

लेकिन संतों ने दया करके उसको बहुत ही सरल कर दिया है। वे कहते हैं वह सबसे परे है। यह ठीक है, लेकिन वह सबसे नज़दीक भी है इतना समीप है जिसका तुमको ख़्याल भी नहीं हो सकता। वह बहुत सहल है। जितनी मेहनत हमको दुनियाँ की चीज़ों को हासिल करने में लगती है उससे भी कम मेहनत से वह हासिल हो जाता है। मगर शर्त यह है कि उससे प्यार हो। उससे प्यार हमारी आत्मा में कुदरती तौर पर है मगर सोया हुआ है और दुनियाँ की और चीज़ों को पाने की कोशिश

के कारण सच्चे रूप में ज़ाहिर नहीं हो रहा है। संतों की सेवा में जाकर उसको जगाओ।

जिस चीज़ को मन प्यार करता है उसको अपने पास ले आता है, खींच लेता है। जिस आदमी को हम प्यार करते है चाहे वह जिस्मानियत के लिहाज़ से हज़ार मील की दूरी पर हो लेकिन प्यार की वजह से हर समय दिल में मौजूद रहता है। जिससे मुहब्बत होती है उसका ध्यान करने में भी कोई तकलीफ़ नहीं होती, बल्कि आनंद आता है। जिससे प्यार होता है उसके ऊपर कितनी भी बड़ी चीज़ क्यों न हो, कुर्बान करने में आनंद आता है, दुख नहीं होता।

इसलिए सबसे आसान रास्ता उस तक पहुँचने का यह है कि बजाय इसके कि यह ख्याल करो कि वह दूर है, यकीन करो कि वह तुम्हारे नज़दीक से नज़दीक है। हर समय उसकी याद रखो उसका ध्यान करो। सोचो, वह तुम्हारा हमेशा का साथी है और उसी के पास जाकर तुम्हें सच्चा आनंद मिलेगा। दुनियाँ की चीज़े उसी ने तुम्हें दी हैं और थोड़े दिन के लिए हैं। उन थोड़े दिनों रहने वाली चीज़ों के लिए अपने असली प्रीतम को न भूलो। जो चीज़ें उसने दी हैं उन्हें अपनी मत समझो। जब तक वे चीज़ें मौजूद हैं और उसने दे रखी हैं, उनकी सेवा में लगे रहो और जब वह वापस मांगे उसे खुशी से वापस कर दो।

इस तरह अपने मन के अन्तर में उससे लौ लगाये रहो। अपनी वृत्ति को बाहर से हटाकर उसी में लगा दो। हर समय उसका ध्यान करो। सब दुनियाँवी चीज़ों का जो ज़ाहिरा सहारा है छोड़कर इसी मालिक का सहारा लो। उसी का असली सहारा है। सब चीज़ों को देने वाला वही है, लेकिन बाहरी रूप दूसरा है, जो धोखा है। जितना तुम दिल से उसके समीप होते जाओगे, इतना लम्बा चौड़ा रास्ता मिनटों में तय होता जायेगा। वह हमेशा–हमेशा से तुम्हारे साथ था, लेकिन और जन्मों में तुम्हारे अख्तियार (वश) में नही था कि इस खुदी के परदे को हटाकर तुम उससे एक हो जाओ। लेकिन इन्सानी ज़िन्दगी में ऐसा मौका तुमको उसने दिया है कि अपनी खुदी को मिटाकर उससे एक हो जाओ।

यह कहना कि वह हमको कितने जन्मों में मिलेगा बेकार है। यह सब तुम्हारे प्रेम पर मुनस्सिर (निर्भर) है और तुम्हारे हाथों में है। अगर

तुम सब कुछ, सब ख्वाहिशात को अपने और उसके बीच से हटा दो तो इसी जन्म में, बल्कि इसी वक्त वह तुम्हें मिल सकता है। सब अपने प्रेम की गहराई पर निर्भर है। ऊपरी तौर पर हम सब कुछ उसको देते हैं, लेकिन वास्तव में देते कुछ नहीं।

(२) आत्मा की वापसी

इन्सान एक उल्टा दरख्त है जिसकी जड़ सच–खण्ड में है और इसका फैलाव इस दुनियाँ में है और इस दुनियाँ में रोज–रोज़ फैलता जाता है। आत्मा में तीन ख़्वाहिशें (इच्छाऐं) छिपी हुई हैं (1) जिन्दा रहने की ख्वाहिश (2) ज्ञान प्राप्त करने की ख़्वाहिश और (3) आनंद प्राप्त करने की ख़्वाहिश। इन्हीं ख़्वाहिशों की पूर्ति के लिये मनुष्य दुनियाँ की हर चीज़ में फँसता है, उनको अपनाता है और जिनसे वह चीज़ें हासिल होती हैं उनको अपना समझ कर रखने की कोशिश करता है।

यह चीज़ें ख़ुद आत्मा के अन्दर मौजूद हैं लेकिन किसी वजह से आत्मा अज्ञान के वश में होकर अपने असली रूप को भूल गई है। उसको चेताने के लिए कुछ ख़ास हस्तियाँ (आत्माएं) इस दुनियाँ में भेजी जाती है। जैसे आदमी अपना अक्स ख़ुद नहीं देख सकता बल्कि अपना रूप देखने के लिये उसे शीशे, पानी या किसी ऐसी चीज़ की ज़रूरत है जिसमें उसका अक़्स पड़े और वह उसको देखे। इसी वास्ते वह हस्तियाँ यहाँ भेजी गई हैं। अगर वह यहाँ न भेजी जाती तो उसे कभी अपना ज्ञान न होता और हमेशा अज्ञान की हालत में पड़ा रहता।

लेकिन चैतन्य कभी अज्ञान की अवस्था में नहीं रह सकता इसलिए उसका यहाँ आना ज़रूरी था। यहाँ आकर चीज़ों में उसका अक्स पड़ता है और वह अज्ञानवश अपने स्वरूप को उसमें देखकर इन चीज़ों को उनका रूप समझता है और उनको अपनाता है। लेकिन दुनियाँ की सब चीज़ें नाशवान हैं एक हालत पर सदा कायम नहीं रहतीं, हमेशा बदलती रहती हैं। एक की होकर नहीं रहती जब वह उससे छिन जाती हैं, दूसरे की हो जाती है या उनका रूप बदल जाता है, तब दुख का होना जरूरी है।

इस तरह से हालांकि एक मतलब हल हो गया कि सुरत या आत्मा सोते से जागृत अवस्था में आ गई, लेकिन अज्ञान अभी दूर नहीं हुआ।

दुख पर दुख उठाती है। कुछ समझ आती है लेकिन मन और माया अपने जाल में उसे बार-बार फाँस लेते हैं। इस तरह से सैकड़ों जन्म गुज़र जाते हैं। सैकड़ों वर्षों के तर्जुबे के बाद उसको ज्ञान होने लगता है कि जिस चीज़ की उसे तलाश है वह तो उसका मेरा ही स्वरूप है। दुख तो मेरे अज्ञान के कारण है। असलियत को समझकर वह मन और माया से वास्ता सिर्फ़ काम निकालने तक रखती है और सुख शान्ति, ज्ञान और आनंद के लिए अपने अन्दर की तरफ़ मुड़ती है।

जितना अन्तर में घुसती जाती है उतनी ही यह तीनों चीज़े बढ़ती जाती है और उनका विश्वास पुख्ता होता जाता है और जितना विश्वास पुख़्ता होता है उतनी और भीतर में घुसती जाती है और बाहरी वस्तुओं से कार्य मात्र के लिए ताल्लुक रखती है। इस तरह धीरे-धीरे पूर्ण रूप से एक दिन अपने अन्दर स्थिति कर लेती है और बाहरी वस्तुओं से ताल्लुक तोड़ लेती है। यही मनुष्य की ज़िन्दगी का मकसद (ध्येय) है। इस मक़सद को हासिल करने के लिए यह जरूरी है कि इन्सान किसी की हिदायत (आदेश) में ज़िन्दगी गुज़ारे क्योंकि जब इन्सान किसी भोग में फँस जाता है तब अव्वल तो उसको बुरा नहीं समझता जब तक कि कोई उसके नुक़्सों से उसे आगाह (दोषों से परिचित) न करें और अगाह हो जाने पर भी उसकी इच्छा शक्ति इतनी कमज़ोर हो जाती है कि बुराइयों को जानने पर भी, उनकी तकलीफ़े देखते हुए भी अपने आपको उनसे निकाल नहीं सकते।

इसलिए ऐसे शख़्स (व्यक्ति) की जरूरत है जो इस रास्ते पर चला हो और जिसने अपनी आत्मा को इस प्रपंच से निकाल लिया हो, जो हमारा हमदर्द हो, जिसकी इच्छा शक्ति इतनी प्रबल हो कि हमको मदद दे सके। ऐसे आदमी के मिल जाने के बाद ज़रूरी है कि हम अपनी कठिनाइयों को उसके सामने रखें। उससे कोई बात पोशीदा (छिपाकर) न रखें, जो राय वह दे उस पर अमल करें और अपने हाल से उसको सूचित करते रहें, समय समय पर उसके सत्संग से लाभ उठाते रहें।

आवश्यक चेतावनी

परमार्थ पर चलने और उस पर क़ायम रहने का सिर्फ़ एक ही तरीका है कि सन्तों के बताए हुए रास्ते पर सख़्ती से अमल (पालन) करें और

जहाँ तक हो उसे अपनायें और अपनी जिन्दगी का हिस्सा बना ले। लेकिन अफ़सोस है कि हम सत्संग में दाख़िल होकर भी उस पर अमल करने की कोशिश नहीं करते।

बरसों गुज़र गये लेकिन जहाँ थे वहीं मौजूद हैं। कभी रास्ते पर शुबहा (शंका) करते है और कभी मुर्शिद (अधिष्ठाता) पर, लेकिन अपनी कमजोरियां नहीं देखते। इसलिए सन्तों के बताए हुए मार्ग पर मज़बूती से चलने की भरसक कोशिश करनी चाहिए।

हरेक सत्संगी का कर्त्तव्य है कि वक्त निकालकर दोनों वक्त संध्या जरूर करें। सुबह व शाम की संध्या को किसी बहाने टाल देना, उत्साह की कमी ज़ाहिर करता है। यह रास्ते की रुकावट का कारण है। जहाँ तक मुमकिन हो भण्डारे में ज़रूर हाज़िर हों। भण्डारे के दिनों में कोई न कोई ज़रूरी काम निकल आता है और भण्डारे पर जाना रद्द हो जाता है। अगर किसी मजबूरी की वजह से न जा सके तो किसी दूसरे वक्त पर इज़ाजत लेकर पहुँचें और अपनी हाज़िरी ज़रूर दें।

अपनी इन्द्रियों को जहाँ तक हो सके, काबू में रखें और दुनियाबी ख़्वाहिशात (सांसारिक इच्छाओं) को कम करते जाये।

ग़लती न करने की बनिस्बत (अपेक्षा) ग़लती करके उसे सुधार लेना ज्यादा अच्छा है। जिस तरह खेत में उपजे हुए खरपात का उखाड़ कर उसी में सड़ने को छोड़ देने से उसकी उपज शक्ति बढ़ती है, उसी प्रकार ग़लती सुधारने से हृदय बलवान बन जाता है। गुरुदेव सबका कल्याण करें, सबको ज्ञान दें।

● ● ●

नव वर्ष की बधाई

आप सभी सत्संगी भाइयों को व उनके समस्त परिजनों को नव वर्ष 2012 की ढ़ेर सारी शुभकामनाएं

सम्पादक, राम संदेश

अध्यक्षीय सदुपदेश

आत्म साक्षात्कार संभव है

हमारे गुरु महाराज पूज्य लालाजी महाराज की सेवा में रहते थे। वे उनके बड़े लाइले थे। आपको 24–25 साल की उम्र में यह सूझी की मेडिकल पढ़ी जावे। आपकी उम्र उस समय कॉलेज में दाखिलें की नहीं थी, फिर भी उनके भीतर में डाक्टरी की पढ़ाई करने का उत्साह था, सो लालाजी महाराज की आज्ञा के लिए याचना की। पूज्य लालाजी महाराज ने कहा, ठीक है। और अद्‌भुत कृपा से उनका दाखिला हो गया। कॉलेज का कोर्स पूरा कर लिया। प्रेक्टिस भी 30–35 साल की। परन्तु वो फ़रमाया करते थे कि हमने यह वक्त व्यर्थ में खोया। यदि हम यही समय पूज्य लालाजी महाराज की सेवा में व्यतीत करते तो उनको यह कहने का अवसर नहीं देते कि कोई भी शख़्स हमारे जीवनकाल में हमारे आशाओं के अनुरुप तैयार नहीं हुआ।

यह हम सब करते हैं। गुरु के जीवन में उनके आदेशों को अपने जीवन में नहीं ढालते। पर्दा डाल कर वह शुभ्रता नहीं आने देते, प्रगति रुक जाती है। हम सब सोचते हैं कि शायद उनके शरीर छोड़ने के बाद सफलता मिल जावे परन्तु यह भूल है। लोगों की मानसिक स्थिति, रहनी–सहनी नहीं बदलती है। इसी प्रकार हमारे गुरु महाराज ने कहा कि हमारी आशा के अनुरुप कोई नहीं बना। हमें भी दुख है इसी बात का है कि हम में से कोई आदमी उनके जीवन काल में उनकी आशा के अनुरुप नहीं बन सका। परन्तु अब तरस रहे हैं कि अपनी भूलों को ठीक करें और कोशिश करें कि जैसा वो बनाना चाहते थे वैसे बनें। इसी प्रकार पूज्य लालाजी महाराज ने अपने एक पत्र में एक नज़दीकी भाई को लिखा कि आपकी आत्मा की चढ़ाई काफी हो चुकी है। अब आप अपने भीतर के जो विचार विकार है उनसे मुक्त होने की कोशिश करिये तथा चरित्र निर्माण करने में आगे ध्यान दीजिए।

चरित्र निर्माण की आवश्यकता

मैं इस ओर बार–बार कहता हूँ व मेरा यह निजी तजुर्बा है कि गुरु की भी कृपा हो, परिस्थितियों की भी कृपा हो परन्तु बिना चरित्र निर्माण के आध्यात्मिकता के पूर्ण शिखर पर पहुँच जावे, यह नहीं हो सकता। तब तक सफलता नहीं मिलेगी जब तक हमारा चरित्र निर्माण नहीं हो। पूज्य लालाजी महाराज का कहना था कि चरित्र निर्माण हो ही नही सकता जब तक कि हम माया में फँसे है यानि अपने शरीर, मन और इन्द्रियों के आधीन हैं, बुद्धि की चंचलता में फँसे हुए हैं। शुद्ध विवेक अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। तो कोशिश करें गुरु का सत्संग प्राप्त करके उनके जीवन का अनुसरण करें, यानि जिस तरह भी हो इसी जीवन में आचरण ठीक करें तथा चित्त पर जितने भी संस्कार, विकार पड़े हुए है उनसे मुक्त हो। जब तक चरित्र निर्माण नहीं होगा, चित्त विकृति शून्य नहीं होगा, तब तक साधना में प्रगति नहीं होगी।

पूज्य लालाजी महाराज और गुरु महाराज के जो पत्र है उन्हें सब भाइयों को बड़ी संजीदगी के साथ पढ़ना चाहिये। एक ख़त में लालाजी साहब ने लिखा है कि आपको आत्मा का भी अनुभव हो जाय और आपको यह भी अनुभव हो जाये कि सारा संसार आप में से ही निकल रहा है या सारा संसार आप में ही समाया हुआ है तो यह स्थिति विश्वसनीय और स्थिर नहीं है यह ठीक वैसे ही है कि जैसे आसमान में वर्षा के बादर इन्द्रधनुष प्रकट होता है परन्तु कितने क्षणों के लिए? केवल 10–15 मिनट के लिये। बिजली बादलों में चमकती है कितनी देर? एक या दो क्षण के लिये।

यदि इसी प्रकार हमारा कोई अनुभव हो जाये तो यह कोई विशेष बात नहीं है। लक्ष्य तो यह है कि आत्मा में हमारी रसाई यानी स्थिति निरन्तर हो जाये एक क्षण भर भी हम आत्म स्थिति की सतत अवस्था से इधर–उधर न हट पाते हों। जो आत्मा के गुण है उनसे हमारे भीतर में इस प्रकार की शक्ति आ जाये कि हमारा व्यवहार ही वैसा बन जाये। प्रत्येक कर्म स्वभाविक रूप में हो, बिना प्रयास हो। यदि प्रयास करना पड़ता है तो अभी स्थिति पूर्ण नहीं हुई है। अभी सफलता पूर्ण नहीं हुई।

लालाजी महाराज का आदेश है कि इतनी ऊँची हालत पर पहुँचकर कर भी अपने ऊपर विश्वास न करें, जब तक कि आपके भीतर में (आत्मा के) वो गुण प्रकट नहीं होते जो शास्त्रों में लिखे हुए है या जो हमारे गुरुजन हमारे लिये कहते हैं, वे गुण स्वभाविक हों, अप्रयास ही हों और हम उन गुणों का विस्तार करें, विकास करें जब तक ऐसा नहीं होता तब तक अभ्यास छोड़ना नहीं चाहिये। कहने का तात्पर्य यह है कि चित्त की जो वृत्तियाँ हैं उनसे जब तक हम मुक्त नहीं होते, शून्य नहीं होते और आचरण निर्मल नहीं होता तब तक जीवन का जो लक्ष्य है, उसमें सफलता प्राप्त नहीं होगी।

निर्लिप्त-सहज-सम-अवस्था

हम सब भाई बहनों को कोशिश करके इस ओर तत्परता से ध्यान देना चाहिए। ठीक है, साधना करो, समाधि में बैठो। विनोबा जी कहते है महीना भर समाधि लगाकर बैठो फिर भी यह एक मानसिक तृप्ति है। इसमें अहंकार नहीं करना चाहिए। संतोष तब होगा जब भीतर में पूर्णतया तृप्ति हो। किसी प्रकार की कोई इच्छा नहीं हो, किसी प्रकार का राग–द्वेष न हो, किसी प्रकार की आसक्ति न हो, कहीं लगाव न हो, और इसके प्रभाव से किसी प्रकार की चित्त में अशुद्धि न हो। सब में हम अपना स्वरूप या ईश्वर का स्वरूप देखें। भीतर में जो भी परिस्थति बने यह बिना प्रयास के ही हो। उसी को सहज अवस्था कहते हैं। उसमें कोशिश न करनी पड़े। स्वतः ही जो ईश्वर के गुण है वो हमारे व्यवहार में प्रकट हो जैसे ईश्वर स्वतंत्र है वैसे ही हम हो। तनिक भी अन्तर न हो। जैसा गुरु है अथवा ईश्वर है वैसा ही बन जाना है। जब तक ऐसा नहीं बनते तब तक साधना अपूर्ण है। फिर जन्म मरण के चक्कर में आ जायेंगे।

परमार्थ के पथ पर कभी संतुष्टि नहीं होना चाहिये, तृप्ति नहीं हो। कभी थकावट नहीं आनी चाहिये। हाँ दुनियाँ के पथ पर थकावट आनी चाहिये। हाँ, पचास साल की उम्र हो गई, अब वानप्रस्थ ले लीजिए। पचहत्तर साल की उम्र हो गई अब सन्यास ले लीजिए। सन्यास का मतलब है – जहाँ–जहाँ मन फँसता है वहाँ–वहाँ से उसको स्वतंत्र करके

ईश्वर के चरणों में लगाओ। पूर्ण वैराग हो, अपने शरीर से तथा अन्य चीज़ों से भी किसी वस्तु, किसी भी चाह, किसी मनुष्य के प्रति कोई आसक्ति न हो।

पूर्ण सन्यासी गेरुआ वस्त्र पहनते हैं। यानि अपना मोह है, इच्छा और अज्ञान है, उसको अग्नि में जला देते हैं। सन्यासी का नाम भी बदल दिया जाता है। उसके जो 'कानूनी अधिकार' होते हैं, न्यायालय उसको नहीं मानता है। वह कानून की नज़रों में मर जाता है। इसलिए सन्यास में पूर्णतया मर जाना चाहिए और यह ज़रूरी नहीं है कि पचहत्तर वर्ष की उम्र में जाकर ही हम ऐसी 'मृत्यु' की तरफ़ भागे।

हमारे संतमत में दुनियाँ को भोगते है और साथ–साथ दुनियाँ का त्याग भी करते जाते हैं। दुनियाँ को भोगते हैं और ईश्वर की याद में रहते हैं। गुरु महाराज का आदेश था कि दुनियाँ को भोगो परन्तु ईश्वर की याद में। भय और हर्ष दोनों अवस्थाओं में उसका स्मरण करो। उसकी स्मृति में सारा कार्य व्यवहार करो। आप दफ़्तर में बैठे हुए हैं, आपको मालूम है कि आपका अफ़सर बैठा हुआ है तो आप कोई ग़लत व्यवहार नहीं करेंगे।

जानते है पर वैसा आचरण नहीं करते

हम जानते हैं कि ईश्वर सर्वज्ञ है, सर्वव्यापक है, वह हमारी सारी चाल–ढाल को देखता है, हमारे व्यवहार को देखता है, परन्तु हमारे भीतर में ईश्वर के या गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा नहीं है तभी तो हम बुरे काम कर बैठते हैं। गलत काम होते क्यों हैं ? इसलिए कि हमारे भीतर में इस विश्वास का आभास ही नहीं है कि ईश्वर हमें देख रहा है। यह एक व्यक्ति की हालत नहीं है, बहुतों की, अधिकतम लोगों की है। ईश्वर का नाम ही लेते है कि हाँ साहब, हम तो ईश्वर पूजा करते है। वास्तव में करता कोई नहीं है। यदि हम पूजा करते हैं, तो हम से बुरे कर्म कैसे और क्यों होते हैं।

तो कोशिश करें, साधना भी करें, समाधि अवस्था में पहुँचने की भी कोशिश करें, जैसा कि हमारे गुरुजनों ने हमें आज्ञा दी है, सिखाया है कि चाहे जहाँ से भी हमें दीक्षा मिली हो, आपके ईष्टदेव ने जैसा

फ़रमाये उसी विश्वास के साथ, श्रद्धा से साधना करें। यह नहीं है कि सत्संग में गये दीक्षा ले ली। कुछ दिनों के बाद कोई और महात्मा आये उनसे भी दीक्षा ले ली। ऐसा करने वाला साधक कभी भी सफल नहीं हो सकता। एक के बनकर रहो, जैसा भी वह रास्ता बताये उसको दृढ़ संकल्प के साथ पालन करो। तनिक भी आपको उसमें संकोच न हो, संदेह न हो। जो आपके इष्टदेव कहे वही करो। यही संतों की अमृतवाणी है। अपने इष्टदेव के आदेशों के अनुसार ही अपना जीवन बना लेने की कोशिश करो। इसी में कल्याण है, आत्म साक्षात्कार एवं परमात्मा से मिलन संभव है। अपना जीवन दाँव पर लगा दो। जीवन का भी बलिदान देना पड़े तो समझो सस्ते में ही आपको परमात्मा मिला।

गुरु की सेवा का सर्वोत्तम रूप

सेवा कई प्रकार की होती है। हाथ-पाँव की सेवा होती है, धन से सेवा होती है, परन्तु मन की सेवा बहुत ऊँची है। यानि जो भी आपको इष्टदेव कहे, उसमें तनिक भी संदेह न लावे। उनकी बातों को यह समझे कि यह ईश्वर का हुक्म है और उनकी आज्ञा का पालन करें। यदि यही बात ध्यान में रखें कि जो भी गुरु महाराज के आदेश है, उन्हीं का पालन करते चलें जायें तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आत्मा का साक्षात्कार दूर नहीं। परन्तु हम करते नहीं, उनकी बातों की तरफ़ ध्यान नहीं देते, अपनी मनमानी करते हैं जैसे कि दीक्षा लेते वक्त जबकि हमने तन, मन, धन देने का वचन दिया, तो हमारा इन चीज़ों से फिर मोह क्यों रहे? परन्तु है कोई ऐसा व्यक्ति जिसको अपने शरीर के प्रति मोह न हो? अपनी धन सम्पत्ति से या स्त्री पुरुष के सम्बन्धों के प्रति मोह न हो? या अपने विचारों को छोड़ दिया हो ?

काफ़ी समय हो गया है। आपको बारम्बार यही अनुरोध करूँगा कि जो आपके इष्टदेव के आदेश हों उनके पालन में कभी भी संकोच नहीं उठाना चाहिये। उनका पूरा-पूरा पालन या अनुसरण करना चाहिये। यदि गुरु की सर्वोत्तम सेवा कर लेंगे, मानव जीवन को सार्थक और ध न्य कर सकेंगे।

गुरुदेव आप सबका कल्याण करें।

सत्संगीय कर्म

सत्संग में हमारे कर्त्तव्य

सत्संग एक ऐसी संस्था है जहाँ आकर हम गुरु (ईश्वर) का सान्निध य प्राप्त करते हैं। केवल एक आस उनके दर्शन और उनसे मिलने की होती है। गुरुदर्शन से हमारी मन, बुद्धि और आत्मा को शान्ति प्राप्त होती है। उनके प्रताप से केवल एक ईश्वर के अतिरिक्त कुछ याद नहीं रहता।

गुरु के दरबार में हम तरह–तरह की उम्मीद लेकर आते हैं, कोई दीन चाहता है तो कोई दुनियाँ को चाहता है। अक्सर दुनियाँ में हमें कोई कष्ट न हो हमारा सब दुनियाबी काम ठीक से हो जाये। इस विचार से ईश्वर को प्राप्त करने की चाहना दबकर रह जाती है। चलिये यह तो अपना व्यकितगत मामला है।

इस सत्संग के प्रति हमारे कुछ कर्त्तव्य भी हैं, यह हमें भूलना नहीं चाहिये। हम सब कुछ जहाँ से प्राप्त करते हैं वहाँ कुछ देना भी पड़ता है। गुरु तो कुछ माँगता नहीं पर वह इतना चाहता है कि उसके सभी शिष्यों में सकारात्मक सामंजस्य बना रहे।

हमारा पहला कर्त्तव्य सत्संग में यह है कि शारीरिक श्रम का योगदान करें। प्रायः हम स्त्रियों में यह भावना होती कि इतना पैसा खर्च करके आये हैं पूजा में बैठ जायें वह भी ठीक है। परन्तु ईश्वर का वास तो सभी स्थानों पर है केवल ध्यान उधर देने की बात है। इस प्रकार जब भी समय हो सहयोग अवश्य दें। ईश्वर ने आपको स्वस्थ शरीर दिया है तो उसका यहाँ आकर धन्यवाद इस रूप में अदा करे।

दूसरा कर्त्तव्य हमारा यह है कि ज्यादा से ज्यादा समय अपने गुरु के ध्यान में बितायें, किसी की बुराई न करें। जिसकी आप आलोचना कर रहे हैं वह भी गुरु का प्यारा है तो वह आपसे कम कैसे हुआ? जब हम अपने आपमें कोई दोष नहीं देखते तभी दूसरे में दोष नज़र आते हैं। इसीलिये पूज्य गुरुदेव कहा करते थे 'बुराई करनी है तो अपनी करो।' इस बात को ध्यान में सदैव रखिये।

सत्संग में आकर दूसरों को सुधारने की कोशिश कभी मत कीजिए। अगर हम अपने को ही सुधार लेंगे तो सबमें बदलाव आ जायेगा। यह भ्रम है कि सामने वाला गलत है अगर आप उसकी बात को ठीक नहीं समझते तो उसे नीचा दिखाने की जगह स्वयं वहाँ से हट जाइये। ईश्वर कृपा बहुत नाजुक होती है हमारे जरा से नकारात्मक व्यवहार से अलोप हो जाती है। थोड़ा महसूस करके देखिये।

किसी को अपने से छोटा या गरीब (कमज़ोर) मत समझिये क्योंकि सब कुछ हमें भाग्य से मिलता है। अगर उसकी आप किसी भी तरह से मदद नहीं कर सकते तो उसके लिये प्रार्थना करना आपके हाथ में है। कभी दूसरों के लिये कुछ माँगकर देखिये, आपका हृदय पवित्रता और ईश्वर प्रेम से गदगद हो जायेगा। यही सत्संग का अनमोल प्रसाद है। एक बाग में अंजीर और जैतून के पेड़ पास–पास थे। सर्दी में अंजीर के सारे पत्ते झड़ गये। जैतून के पेड़ ने अंजीर के पेड़ से कहा तुम इतनी सी भी सर्दी नहीं बर्दाश्त कर सके, तुम तो नंगे हो गये, सारे पत्ते झड़ गये। अंजीर के पेड़ ने कहा, ''यह तो भाग्य की बात है।'' कुछ समय बाद बहुत तेज़ बर्फ पड़ी और जैतुन का पेड़ उस बर्फ के बोझ से बिल्कुल झुक गया और अधिकांश शाखायें जो कमजोर थीं वह टूट कई जबकि अंजीर का पेड़ सीधा खड़ा रहकर उस भयंकर बर्फ़ का सामना करता रहा।

● ● ●

गुरुदेव उवाच

अनुराग और वैराग्य दोनों से काम लो। किसी चीज़ को अच्छा समझकर कबूल करना अनुराग और किसी को बुरा समझकर छोड़ना वैराग्य है। जो वस्तु ईश्वर की तरफ़ को ले जाती है उसे पकड़ों, वही अनुराग है और जो वस्तु ईश्वर से छुड़ाती है उसे छोड़ते चलो। यही वैराग्य है। दोनों का लक्ष्य एक ही है।

प्रेम के दो शिक्षाप्रद प्रसंग

(1) ये कैसी मुहब्बत है?

एक स्त्री को किसी पुरुष से सच्चा प्रेम था और वही उसकी ज़िन्दगी का केन्द्र था। उसके सिवाय दिल में किसी के लिये जगह न थी। जब कोई प्रेमी दिल में समा जाता है और तब किसी का रहना नहीं हो सकता।

जहाँ बाज़ वासा करै, पंछी रहे न और।
जा घट प्रेम प्रकट भया, नहीं कर्म की ठौर।।

वह स्त्री उसी प्रेम की धुन में मस्त रहती थी – खाना, पीना, सोना हराम था, महीनो गुज़रे, उसको प्रेमी के दर्शन नहीं हुए। जब पता चला तो तलाश में दीवानी, बावली, अपने प्रेमी की तरफ़ मस्ती और पागलपन की हालत में रवाना हुई। राह में अकबर का ख़ेमा था। बादशाह ख़ेमें से बाहर जांनमाज़ बिछाये नमाज़ पढ़ रहा था। औरत को पास मरातिब (दर्जे) का ख़्याल कहाँ था, वह बादशाह की जांनमाज़ को अपने पैरों से रौंदती हुई चली गई। अकबर को गुस्सा तो आया मगर नमाज़ की हालत में गुस्से को रोकना ही पड़ा।

वह चलती गई और अपने प्रीतम से मिलकर ख़ुशी–ख़ुशी उसके साथ वापस आई। बादशाह इस अर्से से नमाज़ से फ़ारिग हो चुका था। उसको देखकर बोला – इतनी गुस्ताख़ी? तुझे यह ख़्याल नहीं कि ये जांनमाज़ है और तू इसको अपने नापाक पैरों से रौंदती हुई चली गई?'' और वो जो प्रेम में डूबी हुई थी, निडरता से मुस्कराई क्योंकि प्रेम हरेक इंसान को निडर और बे–परवाह बना देता है। उसने कहा – ''हुजूर यह कैसी इबादत है? ये कैसी मुहब्बत है आपकी?

नर सांची सूझी नहीं-तुम कस लख्यों सुजान।
पढ़ कुरान बौरे भए, नाहि रम्यों रहमान।।

'जनाब! मै तो इन्सान के इश्क में बावली थी। न आपको देखा, न आपके

जांनमाज़ को देखा। मगर आप तो अल्लाह की याद और प्रेम में थे, आपने मुझकों कैसे देख लिया ? मालूम होता है कि कुरान पढ़कर आप दीवाने हो गये और खुदा के इश्क़ ने दिल में सराहत (डुबकी) नहीं ली।'' बादशाह बहुत शर्मिन्दा हुआ। ●●

(2) प्रेम ऐसा भी होता है?

पृथ्वी के सब मनुष्यों ने मिलकर ईश्वर से प्रार्थना करी कि ''हे प्रभु हम दुखी रहते हैं, हम भटक जाते हैं, हमारी मुक्ति के लिये हमें तेरी जरूरत है। तू अपना एक प्रतिनिधि हमारे बीच भेज, जो हम जैसा ही आदमी हो, जिससे हम अपनी बात कह सकें और वो हमारी सहायता कर सके। अतः ऐसे रूप में जिसे हम देख सकें, जो हम जैसा ही हो, तू हमारे बीच आ। उसकी हम पूजा करेंगे और अपना दुख दूर कर सकेंगे।

ईश्वर ने उनकी प्रार्थना सुन ली व आकाशवाणी हुई कि – ''हे मनुष्यों, मैं तुम्हारे बीच तुम्हारे ही रूप में आ रहा हूँ – सामने पहाड़ी पर से तुम्हें एक साधु आता दिखाई देगा। समझ लो कि वो मैं ही हूँ, तम पहाड़ी पर देखो।''

लोगों ने देखा वास्तव में एक साधु दिव्य रूप लिये मुस्कराता हुआ पहाड़ी पर से उतरकर उनकी तरफ आ रहा है। परन्तु लोगों में सब्र नहीं रहा – वो भावना में बह गये व उन्होंने – 'जय भगवान, जय भगवान के नारे लगाने शुरू कर दिये तथा साधु के चरण छूने, उसे हाथ लगाकर देखने तथा उसे पुष्प हार पहनाने के लिये लोगों में भगदड़ मच गई। इस भगदड़ में वो ये भी भूल गये कि चाहे ये स्वयं भगवान ही क्यों न हो, पर है तो साधारण मनुष्य के रूप में ही। सो नुकसान भी पहुँच सकता है और इसका परिणाम यह हुआ कि इस जय हो, जय हो की भगदड़ व धक्का–मुक्की में वो साधु गिर गया। फूलों के हारों के बोझ से उसका सिर ढक गया और सांस घुटने से वो मर गया।

उसके मरने पर कुछ लोगों ने शोर मचाया कि ''अरे ये भगवान तो मर गया, अब क्या करें ? सब ग़मगीन हो गये व फिर निराशा में

डूब गये कि अब हमारा उद्धार कौन करेगा ? अब हम किस की पूजा करेंगे ?

लोगों ने फिर तय किया कि ईश्वर से फिर प्रार्थना की जाये और उन्होंने दुबारा ईश्वर आराधना व प्रार्थना की कि – ''हे ईश्वर! वो तेरा प्रतिनिधि तो हमसे मर गया, अब प्रार्थना कौन सुनेगा ? हम कैसे पार लगेंगे। तू ही पालनहार है अतः कृपा कर व फिर से हमारे बीच आ।''

ईश्वर बड़ा दयालु है, अतः फिर आकाशवाणी हुई कि 'हे मनुष्यों मैं तो तुम्हारे बीच आया था। परन्तु तुमने तो मुझे कुछ कर सकने से पहले ही समाप्त कर दिया। अतः अब तुम इसे ही ईश्वर मानकर पूजा अर्चना करो।' ऐसा कहते ही एक चट्टान का बड़ा टुकड़ा (पत्थर) ऊपर से गिरा व फिर आशकावाणी हुई कि 'तुम अब इससे चाहे लिपटो, चाहे चिपटो, जल या दूध चढ़ाओ। सिन्दूर लगाओ या इत्र लगाओ–चाहे जैसे इसकी पूजा अर्चना करो, इसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। अब ये ही तुम्हारा ईश्वर है व तुम इसी के साथ खुश रहो। और तभी से मनुष्य पत्थर के रूप में भगवान की पूजा करते आ रहा है।

● ● ●

- अगर ईश्वर से कुछ मांगना है तो आत्मज्ञान मांगो।

  – नचिकेता

- भोगों की इच्छा उपभोग से कभी शान्त नहीं होती। भोग भोगने से अधिकाधिक बढ़ती जाती है।

  – विश्वामित्र

राम संदेश के नियम

1) आध्यात्मिक विद्या के गुप्त और अनुभवी रहस्यों तथा सदाचार-शिक्षा को सरल भाषा में जनता तक पहुँचाना हमारी राम संदेश पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

2) राम-संदेश में आत्मिक, नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के लेख ही छपते हैं, राजनैतिक या रोमांचक लेख नहीं। रचनाओं में काट-छांट करने अथवा छापने, या न छापने की स्वतंत्रता सम्पादक को है।

3) राम संदेश का वर्ष जनवरी से आरम्भ होता है। चन्दा फ़िलहाल 20/- (बीस) रुपये है। एक वर्ष से कम तथा आजीवन ग्राहक नहीं बनाये जाते। **डा. एस. के. सक्सेना, 9 नव युग मार्केट, गाज़ियाबाद, उ.प्र. 201009,** के पते पर जनवरी-फ़रवरी के अंत तक अवश्य भिजवा दें।

4) पत्र व्यवहार करते समय कृपया अपना ग्राहक नम्बर लिखें और पता लिखा कार्ड या लिफ़ाफ़ा भी अवश्य भेजें। पता बदलने की सूचना, डाकघर के पिन कोड सहित निम्न पते पर :-

डा. एस. के. सक्सेना, 9 नव युग मार्केट, गाज़ियाबाद, उ.प्र. 201009

कृपया तुरन्त भेज दें - अन्यथा आपकी प्रति वापस आ जाती है या 'विलीन' हो जाती है।

5) राम संदेश के समस्त ग्राहकों की प्रतियाँ बड़े ध्यान से हर बार नौएडा, सैक्टर 34 के डाकघर में पोस्ट की जाती हैं। यहाँ तक की ज़िम्मेदारी हमारी है, आगे की नहीं। यदि 1,3,5,7,9 और 11वें महीने के अंत तक भी राम संदेश की प्रति न पहुँचे तो कृपया उसकी सूचना **डा. एस. के. सक्सेना, 9 नवयुग मार्केट, गाज़ियाबाद, उ.प्र. 201009,** के पते पर अवश्य दें।

राम संदेश

रजि. ऑफिस

9-रामाकृष्णा कॉलोनी, जी. टी. रोड,

ग़ा.ज़ि.याबाद - 201009

सम्पादकीय पता

डा. एस. के. सक्सेना

9 नवयुग मार्केट,

गाज़ि.याबाद, उ.प्र. 201009

PERIODICAL

ग्राहक संख्या, नाम, पता

मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना

मुद्रण : अंकोर पब्लिशर्स (प्रा.) लिमिटेड, बी-66, सैक्टर-6, नौएडा-201301